तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-152 JULY- DECEMBER, 2011

Patron

Samani Charitraprajna

Vice-Chancellor

Editor

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Assistant Editors

Samani Agamprajna

Samani Vinayprajna

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur

Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata

Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata

Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur

Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium

Prof. Bachh Raj Dugar, Ladnun

Prof. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :

Jain Vishva Bharati University

Ladnun-341306, Rajasthan, India

Tulsi Prajñā

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-152 **JULY-DECEMBER, 2011**

Editorial Office

Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati University
LADNUN-341 306, Rajasthan, India

Publisher

Jain Vishva Bharati University
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Printed at

Jaipur Printers Pvt. Ltd.
Jaipur-302 015, Rajasthan, India

Subscription
Three Year Rs 500/-, Life Membership Rs. 2100/-

The views expressed and facts stated in this journal are
those of the writers. The Editor may not agree with them.

अनुक्रमणिका / CONTENTS

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05
The New Facets of Nonviolent Action	Prof. B.R. Dugar	11
The Concept of Bhakti in the Bhāgavata-Purāṇa	Kartik Pandya	17
Environmental Saviours Jain Monasticism	Pooja Sharma	30
A survey of the Karma theory of Jainism	Dr Lopamudra Bhattacharyya	42
Cārvāka Miscellany	Ramkrishna Bhattacharya	55

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
युक्त्यनुशासनालंकार में प्रतिपादित सर्वज्ञ का स्वरूप	अनिल जैन	65
प्रकीर्णक साहित्य : एक अवलोकन	डॉ. अतुल कुमार प्र. सिंह	75
हरिवंश पुराण में प्रतिपादित विविध तपों का गणितीय वैशिष्ट्य	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	93
न्याय-दर्शन में व्याप्ति की अवधारणा	डॉ. राजवीरसिंह शेखावत	102
मोहनीय कर्म एवं मूल प्रवृत्तियां - तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. रत्नलाल जैन	112

प्रवाह परिवर्तन की प्रतीक्षा

अनावश्यक वस्तुओं की बाढ़ और आवश्यक वस्तुओं की कमी ने जीवनको सचमुच जटिल बना दिया है। इस परिस्थिति को नियन्त्रण या कानून के बल पर नहीं मिटाया जा सकता है। एक ओर भारतीय संस्कृति, दर्शन और मानवीय मूल्यों की अमूल्य धारा रोटी की कठिनाई में सिमटती जा रही है, दूसरी ओर सत्ता और पैसे की दुनिया के प्रांगण में अनावश्यक वस्तुओं का खुलकर भोग हो रहा है। यह दशा आश्चर्यजनक ही नहीं, दयनीय भी है। यह तो और भी अधिक दयनीय है कि ऐसी स्थिति में सत्ता, पद और शक्ति का दुरुपयोग हो। अब युग उन व्यक्तियों की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसमें साहस हो और जो प्रवाह को नया मोड़ दे सकें।

- आचार्य तुलसी